प्रश्न: डिंगल भाषा पर एक नोट लिखें?

उत्तर: हिन्दी-साहित्य के आदिकाल के चारण कवियों की भाषा को 'डिंगल' भाषा माना गया है। राजस्थान की साहित्यिक भाषा को डिंगल कहा गया है, लेकिन इसकी व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। वस्तुतः डिंगल के संबंध में आज अनेक परिभाषाएँ प्रचलित हैं। कोई डकार बहुला भाषा को डिंगल मानने के पक्ष में हैं तो कोई 'डिम + गल' डमरु के समान शब्द करते हुए गले से निकली भाषा को डिंगल मानते हैं।

डॉ० एल० पी० टैसीटरी के मत में डिंगल भाषा का अर्थ गँवारु है, इसमें ब्रजभाषा जैसी शुद्धता नहीं। वास्तव में यह शिक्षित चारणवर्ग की साहित्यिक भाषा थी और इसका नियमित व्याकरण भी है। इसमें रस, अलंकार, छन्द आदि का पर्याप्त ध्यान रखा गया है। डॉ० साहब ने डिंगल की समानता के आधार पर इसे डिंगल कहा, जबकि भाषा-विकास की दृष्टि से यह पिंगल की अपेक्षा पहले आती है।

हरप्रसाद शास्त्री के अनुसार डिंगल 'डगल' से बना है और पिंगल के साम्य से इसे डिंगल बना दिया गया। डगल मरुभूमि की भाषा होने के कारण तथाकथित डिंगल भाषा को डगल कहा जाता है — "दीसै जंगल डंगल जेथ जल बाला थाहैं।" लेकिन यह पंक्ति डंगल भाषा के लिए प्रयुक्त नहीं। राजस्थानी में डंगल का अर्थ मिट्टी का ढेला है, लेकिन प्रश्न यह है कि चारणों ने अपनी साहित्यिक भाषा को मिट्टी के ढेले के समान अनगढ़ क्यों कहा? इसलिए यह मत भी किसी पुष्टि प्रमाण के अभाव में युक्तियुक्त प्रतीत नहीं होता।

श्री गजराज ओझा ने 'ड' वर्ण की प्रचुरता के कारण पिंगल के साम्य पर इसे डिंगल माना है,

चारणकाव्यों में कर्णकटु शब्द निःसन्देह अधिक हैं परन्तु उनमें 'ड' वर्ण का आधिक्य नहीं, इसलिए श्री ओझा जी का मत कहना भी निराधार है। श्री पुरुषोत्तम स्वामी डिंगल की उत्पत्ति डिम् + गल से मानते हैं। डिम का अर्थ डमरु और गल का अर्थ आवाज है, अतः जिस भाषा के उच्चारण से डमरु के समान शब्द हो वह डिंगल कहलाई। इसके अतिरिक्त डमरु की ध्वनि को उत्साहवर्धक मानकर उन्होंने डिंगल भाषा को ओजस्विनी भाषा कहा। जबकि डमरु की ध्वनि उत्साहवर्धक नहीं होती, उसका प्रयोग खेल-तमाशे के लिए किया जाता है, अतः डिंगल का ऐसा अर्थ करना चारण-काव्यों के प्रति अन्याय है।

राजस्थान में डिम् + गल से डिंगल की उत्पत्ति मानी गई है, जिसका अर्थ है बालक की भाषा। लेकिन डिंगल साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट है कि उसकी भाषा परिमार्जित साहित्यिक भाषा है। इसलिए उसे बालक की भाषा नहीं कहा जा सकता है।

श्री मोतीलाल मेनारिया के अनुसार डिंगल शब्द का अर्थ है अतिशयोक्तिपूर्ण कविता। इनके अनुसार चारण-भाट अपने आश्रयदाताओं की प्रसन्नता के लिए अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया करते थे, लेकिन इस साहित्य में केवल डींगें नहीं, बल्कि वास्तविकता भी है।

मुंशी देवीप्रसाद के अनुसार इस कविता को ऊँचे स्वर से पढ़ा जाता था, इसलिए डिंगल कहा गया; क्योंकि उन्होंने डींग से लम्बा और ऊँचा तथा गल से बात का अर्थ लिया है।

इस प्रकार डिंगल की व्युत्पत्ति के

[illegible]
गया है।

प्रश्न : लिंग भाव को परिभाषित करते हुए इसकी व्याख्या का उल्लेख करें।

द्वारा
डॉ. लक्ष्मी कुमार
विभाग- हिंदी ([illegible])
मो० नं०- [illegible]
दिनांक- 07-04-2020